IJAER/ March-April 2024/Volume-13/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

भारतीय संस्कृति एवं संगीत के संरक्षण में घराना–परम्परा की भूमिका

डॉ. संगीता
एसोसिएट प्रोफेसर
देव समाज कॉलेज फॉर वूमेन
फिरोजपुर शहर

संक्षेपिका

किसी व्यक्ति, जाति, प्रदेश या राष्ट्र आदि की वे बातें जो उनके मन, रूचि, आचार–विचार, कला–कौशल व सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक हो, संस्कृति कहलाती है। भारतीय संस्कृति सदैव से ही विविधताओं को आत्मसात करती आई है । संगीत भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। वैदिक युग में संगीत कला को धर्म, दर्शन, चिंतन एवं योग से समन्वित कर आध्यात्मिक उन्नति का सर्वश्रेष्ठ साधन माना गया। तत्कालीन सुसंस्कृत समाज को जीवन–दर्शन के लक्ष्य की प्राप्ति शिक्षा, साहित्य एवं कला के सम्मिलित रूप से ही होती थी। उस समय संगीत कला का उद्देश्य 'स्वान्तः सुखाय' तथा 'बहुजन हिताय' रहा। संगीत की धरोहर की सुरक्षा के लिए राज्याश्रय ही एकमात्र साधन था। कालांतर में संगीत–कला गुरुकुल व्यवस्था से निकलकर घरानों के रूप में विकसित हुई। घराना परम्परा के संरक्षण में भारतीय संस्कृति एवं संगीत कला पल्लवित, पोषित एवं विकसित हुई। भारतीय संस्कृति एवं संगीत कला को प्रभावित करने में यह परम्परा अपने उद्देश्य में सफल हुई एवं वर्तमान समय में इस परंम्परा की भूमिका को जानना इस शोध परिपत्र का उद्देश्य है ।

मुख्य शब्द : घराना, संस्कृति, समाज, राष्ट्र, संगीत, आध्यात्मिकता, परम्परा, दर्शन ।

भूमिका

भारत सम्पूर्ण विश्व में अपनी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है। संस्कृति किसी भी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की अनुपम धरोहर होती है। जीवन को उचित मार्ग पर चलाने के लिए विशिष्ट आदर्शों को अपनाते हुए, अपनी पूर्व परम्पराओं एवं मान्यताओं में विश्वास रखने के साथ–साथ, नवीन संघर्षों से सामना करने के लिए जो पद्धति अपनाई जाती है, वही उस समाज की संस्कृति कहलाती है। संस्कृति के वरद हस्त से अनुप्राणित राष्ट्र निरंतर प्रगति के पथ को प्रशस्त करता है। भारत का सांस्कृतिक विकास, भारतवासियों की विभिन्नता के अनुरूप अनेक रूपों में हुआ है इसलिए भारतीय संस्कृति की तुलना एक ऐसे विशाल क्षीरसागर से की जा सकती है जिसमे विभिन्न संस्कृतियों का जल, जातियों का दुग्ध एवं नवनीत इसकी उपादेयता, सुस्वाद्यता एवं स्वास्थ्यवर्धकता में वृद्धि करता है। प्राचीनता एवं निरंतरता भारतीय संस्कृति की ऐसी दो विशेषताएँ हैं जो अन्यत्र उपलब्ध नही होती। अपनी ओजस्विता के अतिरिक्त इस निरंतरता का कारण भारतवासियों की विदेशी विचारों को अपनाने की आदत, असंगतियों में सामंजस्य स्थापित करने की भावना एवं नवीन विचारों को समाहित कर नवीन दिशा प्रदान करने की क्षमता है।

सांस्कृतिक वैविध्य

भारतीय संस्कृति शताब्दियों से विविधताओं को अपने भीतर समाविष्ट किये हुए है। स्थानीय रीति–रिवाज, त्यौहार, उत्सव, पर्व में भले ही भेद हो परन्तु यह मूल रूप से एक है। संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में उसी तरह व्याप्त है जैसे पुष्पों में सुगंध । इसका निर्माण एक या दो दिन में नही होता अपितु युगों में होता है । संस्कार हजारों वर्षों में निर्मित होते हैं इसलिए प्रत्येक देश की संस्कृति भी भिन्न होती है। किसी भी देश की कलाएँ उस देश की आत्मा होती हैं और इन्ही कलाओं में ही संस्कृति की झलक स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। संस्कृति में समाज की गहरी आस्था होती है, इसीलिए हर राष्ट्र की अपनी संस्कृति होती है जिसमें समाज की आत्मा निवास करती है । संस्कृति यदि समाज का दर्पण है तो कला संस्कृति का। संस्कृति के मापदंडों से विमुख होकर कोई भी कला विकसित रूप ग्रहण नहीं कर सकती । हमारी संस्कृति सदैव से ही धर्म से अनुप्राणित रही है । संगीत तथा ईश्वर एक–दूसरे के पर्यायवाची हैं। पूजा–अर्चना, मन्त्र–पाठ, आरती, देवी–देवताओं की प्रशंसा में रचित ध्रुवपद, ख्याल, रागध्यान, वीणा, डमरू आदि इस बात के द्योतक हैं कि भारतीय संगीत कभी भी भारतीय संस्कृति एवं धर्म से विमुख नही हुआ। भारतीय संगीत हमारी सांस्कृतिक महानता का प्रतीक है । संगीत कला सत्य, शिव एवं सुंदर होने के साथ–साथ रसात्मकता से भी परिपूर्ण है इसलिए संगीत को मानव – समाज एवं मानवोचित गुणों के सृजन के लिए कल्याणकारी माना गया है । यह मानव समाज की एक कलात्मक उपलब्धि तथा सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक है जिसमें कलाकार स्वर, लय एवं ताल के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करता है । संगीत भारतीय संस्कृति का ऐसा अभिन्न अंग है जो मनुष्य के जन्म से लेकर उसके अंत समय तक साथ–साथ चलता है ।

भारतीय संस्कृति की विशेषता इसकी समन्वयक शक्ति में निहित है इसीलिए विभिन्न आक्रान्ताओं के आक्रमण भी इस देश की संस्कृति को छिन्न–भिन्न नही कर पाए। जिस तरह आर्यों से लेकर अंग्रेजों तक आई जातियों का मिश्रण हमारी संस्कृति में देखा जा सकता है, उसी प्रकार संगीत में भी विभिन्न जातियों, लोगों और समय का प्रभाव स्पष्टतया देखा जा सकता है। मुगल बादशाहों के समय में वाद्यों,रागों, बंदिशों, नृत्य इत्यादि पर मुस्लिम संस्कृति का अत्यधिक प्रभाव पड़ा । तबला, सितार, रबाब, टप्पा, ठुमरी, गजल आदि मुगल संस्कृति के प्रभाव से ही उत्पन्न हुए परन्तु भारतीय संस्कृति ने उन्हें भी अपने भीतर समाविष्ट कर लिया। अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् हारमोनियम, वायलिन, गिटार, क्लार्नेट, पियानो आदि वाद्य भी हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुके हैं। भारतीय संगीत में महान गायक– वादकों की श्रेणी में हिन्दू–मुस्लिम समान रूप से स्थान पाते हैं। इस सांस्कृतिक विविधता को घराना– परम्परा ने शताब्दियों से अपने भीतर समाविष्ट किया हुआ है ।

घराना–परम्परा

साधारण भाषा में 'घराना' शब्द के अनेक अर्थ हैं जैसे– घर कुटुंब, संप्रदाय, वंश–परम्परा आदि। विभिन्न विद्वानों ने शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में घराना शब्द को इन्ही में से किसी एक या अनेक अर्थों के साथ सम्बद्ध किया है ।

प्रसिद्ध विद्वान श्री कृष्णराव शंकर पंडित के अनुसार :

''शताब्दियों या बहुत वर्षों की परम्परा, उच्च कोटि के गुरु कई पीढियो की गुरु–शिष्य परम्परा सब मिलकर एक घराना बनता है।

श्री वी. एच. देशपांडे के अनुसार :

''घराना अर्थात पहचान के हिसाब से गायकी की विशिष्ट रीति बनाए रखने वाली लेकिन उसमे प्रत्येक गायन के साथ नई विशेषताएँ सम्मिलित करने वाली और इस प्रकार सिलसिला बनाए रखने वाली परम्परा है । परम्परा एवं पृथकता के सम्मिश्रण से घराने जड़ पकड़ते एवं बढ़ते जाते हैं।

घराना शब्द से तात्पर्य उन गायकों या वादकों से है जिन्होंने पिता– पुत्र या गुरु–शिष्य परम्परा के रूप में गुरु की शैली को अपनाया है ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों की अपनी एक अलग पहचान है । हिन्दुस्तानी संगीत घरानों की छत्र– छाया में पनपा है और इसको जीवित एवं संरक्षित रखने का श्रेय घराना परम्परा को जाता है । यह परम्परा संगीत के त्रिविध प्रकारों यथा – गायन, वादन एवं नृत्य में पाई जाती है । दक्षिण भारत में इन्ही घरानों को सम्प्रदाय कहकर पुकारा जाता है । इन्हें पाश्चात्य देशों में 'स्कूल्ज' के नाम से जाना जाता है।

पुरातनता

गुरु–शिष्य परम्परा शिक्षण की सबसे प्राचीनतम एवं सर्वश्रेष्ठ प्रणाली मानी जाती है और घराना परम्परा इसी गुरु–शिष्य परम्परा का ही एक रूप है । प्राचीन गुरु–शिष्य परम्परा ने ही संगीत कला को अधिक समृद्ध एवं संपन्न बनाया है । घराना परम्परा 300 वर्ष से अधिक पुरानी नही है । भारत में वेदों के समय से ही संगीत शिक्षा गुरुमुख से दी जाती थी। कतिपय विद्वानों के अनुसार, वैदिक काल में प्रचलित ष्शाखाष और 'संहिता' से लेकर मध्यकालीन सम्प्रदाय, वाणियों तक यह गुरुशिष्य परम्परा घराने के रूप मे विकसित होती गई। गुरुकुल में रहकर गुरुमुख से निसृत वाणी को कठोर अनुशासन, नियमित एवं संयमित जीवन व्यतीत करते हुए अनवरत रूप से ग्रहण करते जाना ही शिक्षा का एकमात्र साधन था जिसके अंतर्गत आश्रमों में रहकर शिष्य अपनी शिक्षा को ग्रहण किया करते थे। हिन्दू युग में घराना शब्द प्रचार में नही था। उस समय केवल गुरु–शिष्य परम्परा या सम्प्रदाय नाम था। पहले घराने न होकर उनका रूप बदला हुआ था और समय के परिवर्तन के अनुसार घराने अस्तित्व में आए। घराने एक प्रकार से संगीत शिक्षा के औपचारिक केंद्र थे।

घराना परम्परा एवं संगीत संरक्षण

घरानों ने संगीत शिक्षा देने के साथ–साथ संगीत कला को संरक्षित रखने में आरंभ से ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। घराने का मूल प्रवर्तक अपने वंशज या शिष्य को अपने घराने की सभी विशेषताएँ सिखा कर तैयार करता है और इस प्रकार से अपने घराने की समस्त विशेषताओं को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करता है। कलाकार की कला में परिपक्वता आने के पश्चात् वही परिपक्वता विशिष्ट शैलियों को जन्म देती है जिनसे घरानों का प्रादुर्भाव होता है व घरानों के माध्यम से तत्कालीन सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अवस्था का ज्ञान सहज रूप से ही लगाया जा सकता है। घराना–परम्परा का जन्म ही विदेशी आक्रमणकारियों से भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर संगीत को सुरक्षित रखने के लिए हुआ ।

मुगल बादशाहों का शासन प्रारंभ होने पर कुछ संगीतज्ञ संगीतजीवी बन गए जबकि कुछ संगीतज्ञों ने संगीतोपासक बनकर दूर वनों एवं आश्रमों में रहकर संगीत–साधना कर अपनी संस्कृति एवं संगीत को संरक्षित किया। हिन्दुस्तानी संगीत की आध्यात्मिक गरिमा तथा शास्त्रों पर आधारित स्वरूप को पल्लवित तथा पोषित करने का श्रेय उन परम्पराओं को ही प्राप्त है जो वर्षों से गुरु–शिष्य परम्परा के रूप में चली आ रही हैं। किसी भी कलाकार की कला के प्रदर्शन को देखकर उसकी साधना परिश्रम एवं लगन का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। घरानों के माध्यम से दी जाने वाली सीना–सीना तालीम घराना–परम्परा की मुख्य विशेषता है। घराना–परम्परा में शिष्य श्रद्धा, लगन, परिश्रम एवं भक्ति इत्यादि गुणों को आत्मसात करता था तथा गुरु–गृह में पुत्र तुल्य रहकर गुरु की सेवा करते हुए लगन और परिश्रम से शिक्षा ग्रहण करता था। तत्पश्चात यह शिष्य का दायित्व रहता था कि वह किस प्रकार अपने घराने की परम्परा को आगे बढ़ाए।

घराना–परम्परा में गुरु हर किसी को संगीत सिखाने के लिए बाध्य नही था। वह स्वयं विद्यार्थी की अभिरुचि, श्रद्धा, लगन, स्वभाव, चरित्र एवं वैयक्तिक योग्यता का आकलन कर ही उसे अपने शिष्य के रूप में अपनाता था। तत्पश्चात शिष्य की देखभाल से लेकर संगीत शिक्षण तथा उसके वैयक्तिक विकास तक की सम्पूर्ण जिम्मेदारी गुरु की ही होती थी। इस परम्परा से शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिष्य गुरु के संरक्षण में रहते हुए कई वर्षों तक षड्ज साधना करता था या एक ही राग सीखता था। गुरु प्रातः काल की मधुर बेला में ही शिष्य को अपने संरक्षण में स्वर–भराव या मन्द्र साधना का विशेष अभ्यास कराता था जिससे उसकी आवाज की तैयारी नजर आती थी। शिक्षा के इस रूप में अनुशासनबद्ध, सहनशील परिश्रम की आवश्यकता होती थी। गुरु अपने शिष्य की आवाज की गुणवत्ता एवं ग्रहण क्षमता देखकर ही गायन अथवा वादन–विधा का चयन करता था। रागों का क्रम भी गुरु द्वारा ही निर्धरित किया जाता था जिससे शिष्यों में गाने की समझ, राग–अवतारणा की रूप–रेखा, तैयारी एवं कंठ साधना पर विशेष बल दिया जाता था। इस परम्परा से सीखने वाले शिष्य श्रद्धा, लगन आत्मविश्वास, परिश्रम, लगन आदि गुणों से ओत–प्रोत तथा अपनी संस्कृति की रक्षा करने वाले होते थे। गुरु का लक्ष्य गंडाबंध शिष्य में समस्त सांगीतिक गुणों का आविर्भाव करना होता था क्योंकि गुरु के द्वारा तैयार यही शिष्य ही उस घराने की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए घराने का नाम रोशन करते थे।

घराना – परम्परा में संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष से अधिक क्रियात्मक पक्ष पर अधिक जोर दिया जाता था जिससे शिष्य में बौद्धिक विकास के साथ – साथ भावानुभूति एवं अभिव्यक्तिकरण की क्षमता का भी निर्माण होता था । गुरु से सम्पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर वह एक उत्तम कलाकार के रूप में बाहर आता था और पूर्ण विश्वास से अपनी प्रस्तुति देता था । मंच पर शिष्य का प्रदर्शन ही उसकी योग्यता की परिपाटी होता था । घरानों के प्रति दृढ आस्था रखने के कारण कलाकार अपने ही घराने से सम्बद्ध रहकर उसे पल्लवित एवं पोषित करता था परन्तु फिर भी कई कलाकार ऐसे हुए जिन्होंने विभिन्न घरानों की सौन्दर्यात्मक विशेषताओं को अपनाने के लिए भिन्न – भिन्न घरानों से शिक्षा ग्रहण की । गायकी को समृद्ध बनाने के लिए बौद्धिक क्षमता एवं सामर्थ्य के आधार पर एक से अधिक घरानों की तालीम कलाकार को बहुमुखी प्रतिभा से युक्त बनाती है और सांगीतिक परम्परा को परिपुष्ट करती है। विविधता के आधार पर ख्याल शैली के मुख्य घराने ग्वालियर, आगरा, किराना, दिल्ली, पटियाला, जयपुर, रामपुर, अतरौली, मैहर, कव्वाल बच्चों का घराना आदि बने।

यद्यपि इस परम्परा में गुणों के साथ – साथ कुछ दोष भी थे परन्तु यदि हम इस परम्परा की तुलना संस्थागत संगीत प्रणाली से करें तो इसमेंछात्र को महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय से शिक्षा करने के बाद भी एक उत्तम कलाकार बनने के लिए किसी ग्रहण योग्य गुरु की शरण में जाना ही पड़ता है । यदि घराना – परम्परा नही होती तो हमारे संगीत की अनमोल धरोहर सुरक्षित नही रह पाती । विगत वर्षों मे संगीत के संरक्षण एवं परिवर्धन के लिए घराना – परम्परा ने, जो कार्य किये हैं, वह निस्संदेह श्लाघा योग्य हैं परन्तु वर्तमान काल में इसकी उपयोगिता कम होती जा रही है।

आधुनिक युग में संगीत का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत हो गया है । आज छात्रों को भिन्न – भिन्न घरानों की शिक्षा एक ही मंच से मिल जाती है और वे प्रत्येक घराने की सुंदर बातों को ग्रहण करके अपने गायन –वादन में सम्मिलित करना चाहते हैं । इस गुरुमुखी प्रदर्शनकारी कला का शिक्षण कार्य पहले गुरु द्वारा ही किया जाता था, परन्तु अब एक स्तर के बाद उसे टेप, ग्रामोफोन, पत्र – पत्रिका आदि के माध्यम से भी संगीत शिक्षा प्राप्त होती है । संस्थागत शिक्षण प्रणाली के आने से संगीत कला की गणनात्मक वृद्धि तो हुई है परन्तु गुणात्मकता का हास हुआ है, ऐसा कथन संभवतः कोई अतिश्योक्ति नही होगा ।

निष्कर्ष

आजकल के इस भागदौड़ भरे जीवन में यदि सोचा जाए कि संगीत कला के स्तर में गुणात्मक वृद्धि के लिए घराना–परम्परा के गुणों को अपनाया जाना चाहिए, ऐसा संभव नही है। परन्तु फिर भी कहीं–कही संगीत विद्वान आज भी इसकी उपयोगिता बनाए रख रहे हैं। इस परम्परा को पुनर्जीवित करने का प्रयास संगीत रिसर्च अकादमी, कोलकाता, श्री राम भारतीय कला केंद्र एवं कत्थक कला केंद्र, नई दिल्ली तथा नेशनल सेंटर फॉर परफोर्मिंग आर्ट्स, मुंबई द्वारा किया जा रहा है। ये संस्थान युवाओं को घराना – परम्परा से ही शिक्षित करने का प्रयत्न कर रहे हैं जिससे भारतीय संस्कृति की अनमोल विरासत संगीत सुरक्षित रह सके। घराना–परम्परा हमारी मार्गदर्शक रही है इसी कारण से आज भी ये संस्थान संगीत शिक्षार्थियों को घराना–परम्परा की तरह का सांगीतिक वातावरण देकर तथा घरानेदार संगीतज्ञों द्वारा शिक्षा दिलाकर अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. डॉ. मधुबाला सक्सेना : ख्याल शैली का विकास, विशाल पब्लिकेशन्स, कुरुक्षेत्र, 1985
2. डॉ. रमाकांत द्विवेदी : संगीत स्वरित, साहित्य रत्नालय, कानपुर, 2004
3. संगीत, फरवरी, 2016
4. डॉ. मधुबाला सक्सेना : भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1990
5. डॉ. सीमा जौहरी : सांगीतिक निबंध माला, पीयूष प्रकाशन, दिल्ली, 2001
6. डॉ. सुशील कुमार चौबे : हमारा आधुनिक संगीत, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 2005
7. डॉ. अरुण मिश्रा : भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, 2008
8. संगीत, संगीत कार्यालय, हाथरस, मार्च 2014